Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

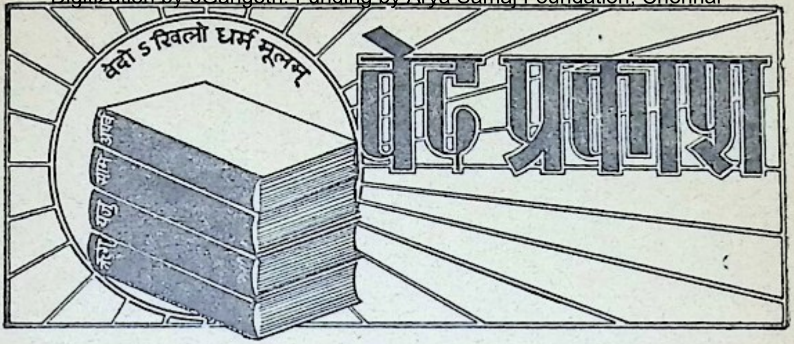

गो-सेवा का अवसर हाथ से न जाने दें !

मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर लगभग ६०० एकड़ जमीन पर हासानन्द वर्मा गोचर भूमि ट्रस्ट स्थित है। यह भूमि आसपास की हजारों गायों और पशुओं को चरने की सुविधा देती है।

इस भूमि पर ट्रस्ट की गोशाला भी है। गोशाला में लगभग ३०० गो-धन हैं। गोशाला के पास खेतीहर जमीन व ट्यूबवेल भी है। इस वर्ष भयंकर वर्षा और ओलों की वर्षा से चारा सड़-गल गया।

व्यवस्थापक श्री रामबाबू बड़े मार्मिक शब्दों में लिखते हैं—

"इधर इस वर्ष अत्यन्त कठिन परीक्षाफल चल रहा है—मार्च ८१ में भूसे का भाव ७·५० रुपये मन था—चढ़ते-चढ़ते ३० रुपये मन तक बिका। इधर अप्रेल में घटकर १५ रुपये मन तक आया और अब फिर दैवी प्रकोप के कारण समस्त कृषि कार्यक्रम छिन्न-भिन्न हो गया और २० रुपये मन हो गया है। २१ अप्रेल से अब तक ७ बार पानी पड़ चुका है—खेतों में पड़े अनाज थ्रेशिंग न हो सकने के कारण सड़ने लगे हैं। गत रात्रि का ओलों का तूफान अभूतपूर्व था— इतने बड़े ओले मैंने अपनी ५६ वर्ष की आयु में पहली बार देखे। अपनी जई की फसल खेत-खलिहान में पड़ी गलने लगी है और भविष्य की सभी आशा अत्यन्त धूमिल हो गई है—पिछले आर्थिक भार को तो भगवान् ने किसी तरह पूर्ण किया परन्तु अबकी बार किस तरह सँभाल सकेंगे यह वे ही जानें—अपने यहाँ लगभग १६ मन रोजाना का सूखा भूसा डलता है—३०० के लगभग पशु संख्या है—बहुत ही असह्य स्थिति बनने जा रही है।"

मैं व्यक्तिगत रूप से वेदप्रकाश के सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि इस स्थिति से उबारने के लिए अधिक-से-अधिक धन गोशाला के लिए दान में दें।

दानदाताओं के नाम वेदप्रकाश में सधन्यवाद प्रकाशित किये जायेंगे।

चैक मथुरा-वृन्दावन हासानन्द गोचर भूमि ट्रस्ट के नाम से भेजें। मनीआर्डर मेरे व्यक्तिगत नाम, विजय कुमार, ४४०८, नयी सड़क, दिल्ली के नाम भेजें।

सधन्यवाद !

—विजयकुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ३१, अंक ११] वार्षिक मूल्य : पाँच रुपये [जून, १९८२

सम्पा० : विजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

नमस्ते की व्याख्या

लेखक—स्वर्गीय श्री पण्डित सुखदेव विद्यावाचस्पति

हमारी आर्य जाति का वेद ही एकमात्र स्वतःप्रमाण धर्मपुस्तक है। यही हमारा ईश्वरीय ज्ञान है। अपने आपको आर्य या हिन्दू कहनेवाला कोई भी व्यक्ति इस सिद्धान्त से इन्कार नहीं करेगा। वैदिक धर्मी तथा पौराणिक धर्मी, सभीके आचार-व्यवहारका मूलस्रोत वेद ही होना चाहिए। वैसे तो भारतवर्षके अन्दर बहुतसे धर्म प्रचलित हैं, परन्तु हमें इस लेखमें उन धर्मोंसे कुछ शिकायत नहीं करनी, जो वेदको स्वीकार नहीं करते, क्योंकि जब वे वेदोंको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते ही नहीं, तो उनके सामने वेदों का प्रमाण उपस्थित करके हम क्या कहेंगे? अतः, हे वेदानुयायी भाइयो! आओ, आज हम इस बातपर विचार करें कि वैदिक साहित्य के अनुसार हमारा परस्पर सत्कार एवं आशीर्वादसूचक शब्द क्या होना चाहिए? हमारी जातिमें तो एकताको आनेमें ही डर लगता है। हमारे रीति-रिवाज एक नहीं, हमारे विचार एक नहीं, हमारी शिक्षा एक नहीं, मतलब कहने का यह कि हमारा कुछ भी एक नहीं। "एकता" के विश्रामके लिए जबकि हमारा कुछ भी एक नहीं, तो एकता आवे कहाँ? कोई कहता है "नमस्ते" तो दूसरा चिल्लाता है "जयगोपालजी"; एकने बड़े मीठे स्वरमें कहा "सीताराम", तो दूसरा भन्नाके बोलता है बोलो "राधेश्याम"; और लगे दोनों लड़ने। एकने किया "राम राम" तो दूसरे ने उत्तर दिया "जय श्रीकृष्ण"। एक करे दण्डवत् और प्रणाम तो दूसरा करे सलाम। कुछ समझ में नहीं आता कि कौन ठीक कहता है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भला पूछो तो "राम राम" कहनेवालोंसे कि क्या महाराजा रामचन्द्रजी अपने पिता दशरथको भी सत्कार करते समय "राम राम" ही कहा करते थे और राजा दशरथ भी अपने बेटेको "राम राम" कहकर ही उत्तर देते थे ? जिस समय राधा (जिसके बारेमें सुना गया है कि वह श्रीकृष्ण की विवाहिता पत्नी नहीं थी) और कृष्ण परस्पर बड़ी उत्कण्ठासे चिर प्रतीक्षा के पश्चात् मिलते थे, तो वे भी क्या परस्पर "राधाकृष्ण" ही कहा करते थे ? स्थूलबुद्धि तो यही कहती है कि रामचन्द्र और दशरथ "राम राम" नहीं कहते होंगे और राधा तथा कृष्ण भी परस्पर "राधाकृष्ण" नहीं पुकारते होंगे। यह भी समझ में आता है कि कृष्णने भी कभी किसीका 'जयगोपाल' सूचक शब्द से सम्मान नहीं किया होगा।

मिलें परस्पर सम्मान करनेके लिए या आशीर्वाद लेनेके लिए और बोलें किसी स्त्री और पुरुषका नाम ! यह कैसी अप्रासंगिक बात है।

पूर्व पक्षी—महाराजा रामचन्द्र और कृष्ण विष्णुके अवतार थे, अतः वे साक्षात् परमात्मा थे। परस्पर मिलते समय यदि परमात्माका नाम लिया जाए तो उसमें क्या दोष है ?

सिद्धान्ती—एक तो भाई परमात्मा अवतार लेता ही नहीं। यदि "दुर्जनतोषन्याय" से मान भी लिया जाय कि परमात्मा अवतार लेता है, तब भी तो उस समय वह पुरुष ही बना था। उस पुरुष बने परमात्माका नाम लेना आपके मतमें बुरा नहीं, अच्छा है। तो ठीक रहा, ऐसे पुरुष बने परमात्माका नाम हर स्थानपर बिना प्रसंगके भी ले लिया करो। लेनेसे शायद पाप तो न हो पर व्यवहार तो नहीं चलेगा। एक मालिकको पानीकी प्यास लगी है और वह अपने नौकरसे कहता है "राम राम"; पतिको लगी भूख और वह लगा अपनी स्त्रीसे कहने "राधाकृष्ण"। भाई ! इन दोनों स्थानों पर आपके कथनानुसार सम्भवतः "राम राम" और "राधाकृष्ण" कहना पाप तो नहीं, पर इतना कहने मात्रसे तो मालिक तथा पति दोनों ही प्यासे तथा भूखे मरेंगे। तुम इस प्यास और भूखके अवसर पर "राम राम" को स्मरण करो या न करो, हमें इससे कोई मतलब नहीं, परन्तु हमारा कहना यह है कि प्यासके समय यह अवश्य कहो कि "पानी लाओ" और भूखके समय यह अवश्य कहो कि "भोजन लाओ"। तभी जान बचेगी।

छोटा अपने बड़ेका सत्कार करने गया और कहने लगा "राम राम" बड़ेने भी आशीर्वादमें दोहरा दिया "राम राम"। तो इससे क्या सत्कार और आशीर्वाद सूचित हो गए ? कदापि नहीं। जैसे "राम राम" आदि शब्दोंके प्रयोग से भूख और प्यास नहीं बुझती, इसी प्रकार इन शब्दोंसे सत्कार एवं आशीर्वाद भी सूचित नहीं होते।

पू०—तो आप ही बताइए, ऐसे अवसरपर किस शब्दका प्रयोग किया जाय ?

सि०—शब्द ऐसा कहो जो वेदप्रतिपादित हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा यह दावा है कि वेदोंमें "राम राम" आदि शब्दोंसे कहीं भी सत्कार सूचक शब्दोंका प्रयोग नहीं है। वेदोंमें तो क्या आप सारे प्राचीन संस्कृत साहित्य-को भी पढ़ जाइए, कहीं एक-दूसरेके साथ "राम राम" या "राधाकृष्ण" आदि शब्दोंका प्रयोग नहीं है। पौराणिक धर्मावलम्बियोंको अपने पुराण, महाभारत, तथा रामायण या मनुस्मृति आदि ग्रन्थोंको भी देखना चाहिए। उनमें कहीं भी इन मनुष्यवाचक शब्दोंका परस्पर सत्कारके लिए प्रयोग विहित नहीं है। सभी वेद, पुराण, इतिहास तथा स्मृति आदि ग्रन्थ और शब्द की आज्ञा देते हैं। आर्य-समाज उसी शब्दका प्रचार करना चाहता है।

पू०—वह शब्द क्या है ?

सि०—वेदादि सत्य शास्त्र तथा पुराणादि ग्रन्थ सभी एक स्वरसे यही कहते हैं कि परस्पर "नमस्ते" शब्दका प्रयोग होना चाहिए।

इस "नमस्ते शब्दमें बहुतसे प्रमाण देनेसे पूर्व इस शब्दका अर्थ जान लेना आवश्यक है। "नमस्ते" शब्दको दो टुकड़ोंमें बाँटा जा सकता है:—

"नमः—ते"। व्याकरणके जाननेवाले जानते हैं कि "ते" शब्दका अर्थ है "तुम्हारे लिए (ते—तुभ्यम्—तुम्हारे लिए) परिणामतः 'नमस्ते' शब्दका अर्थ यह हुआ कि तुम्हारे लिए नमः। अब केवल विवाद है 'नमः' शब्द पर। आइये, हम इस 'नमः' शब्दके अर्थका भी विवेचन करें। 'नमः' शब्दके निम्न अर्थ अधिक प्रसिद्ध हैं:—

(१) नमः=सत्कार, श्रद्धा, किसीके सामने झुकना।

क—अमरकोषमें आया है 'नमो नतौ'। 'नमस्' अव्यय 'नति' अर्थात् किसीके सामने झुकनेके अर्थमें आता है।

ख—यास्कनिघण्टु ३ : ५ में 'नमस्यति' का अर्थ किया है 'परिचरति'। अर्थात् सेवा करने, सत्कार करनेके अर्थमें नमस्यति शब्द आता है।

ग—सिद्धान्तकौमुदीमें 'णम' धातु प्रह्वत्व अर्थात् सत्कार अर्थमें आता है।

ग—पं० शिवदत्त तत्त्वबोधिनीकी टिप्पणी में लिखते हैं—

"अपकृष्टत्वज्ञानबोधनानुकूलो व्यापारो नमः पदार्थः"

अर्थात् जब मनुष्य दूसरेके सामने ऐसी क्रिया करे जिससे वह उस दूसरेसे छोटा प्रतीत हो, वही क्रिया 'नमः' शब्दका अर्थ है। जैसे जब कोई हाथ जोड़कर माथा नंवाकर किसीके सामने झुकता है तो वह उससे छोटा ही प्रतीत होता है। अर्थात् 'नमः' करनेवाला दूसरेका सत्कार कर रहा होता है।

(२) नमः=भेंट, त्याग।

क—आप्टे संस्कृत कोषमें 'नमः' शब्दका अर्थ किया है—a gift, Present जिसका अर्थ भेंट ही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ख—श्री पं० शिवदत्तजी तत्वबोधिनी पर टिप्पणी करते समय लिखते हैं—'एषोऽर्घः शिवाय नमः इत्यादौ त्यागो नमःशब्दार्थः'। शिवके लिए जब अर्घ भेंट किया जाता हो, वहाँ यदि 'नमः' शब्दका प्रयोग हो तो उसका अर्थ 'त्याग' है।

ग—नमः sacrifice त्याग। आप्टे संस्कृत कोष।

(३) नमः=अन्न।

क—यास्कनिघण्टु २।७ में 'नमः' शब्दका अर्थ 'अन्न' भी किया गया है। अन्न यहाँ सब भोग सामग्रीका उपलक्षक या प्रतिनिधि है। इसमें अपने निर्वाहके कपड़े, रुपया, पैसा पशु तथा मकानादि सभी आ जाते हैं।

ख—शतपथ ब्राह्मण ६।३।१।१७ में भी कहा है 'अन्नं नमः' अर्थात् अन्न ही 'नमः' है।

ग—आप्टे संस्कृत कोष में 'नम' शब्दका अर्थ किया है Food भोजन।

(४) नमः=वज्र।

क—यास्कनिघण्टु २।२० में नमः शब्दका अर्थ वज्र भी किया गया है। वज्रका मतलब उनसब भयंकर शस्त्रास्त्रोंसे है जिनसे दुष्टोंका संहार किया जाय।

ख—नमः a thunder bolt वज्र। आप्टे संस्कृत कोष।

(५) नमः=यज्ञ।

शतपथब्राह्मण ७।४।१।३०॥२।४।२।२४॥२।६।१।४२॥६।१।१।१६॥में यज्ञोवै 'नमः' कहकर 'नमः' शब्दका अर्थ 'यज्ञ' भी किया गया है। इसी प्रकार शतपथ-ब्राह्मणमें कहा है—

'तस्मादु ह नायज्ञियं ब्रूयान्नामस्तऽइति यथा हैनं' (अयज्ञियं) ब्रूयाद् यज्ञस्त इति तादृक्तत् ॥ (श० ७।४।१।३)

यह वाक्य भी यही सिद्ध करता है कि 'नमः' शब्द 'यज्ञ' का भी वाचक है।

यद्यपि संस्कृत साहित्य में 'नमः' शब्दके कई अर्थ हैं, तथापि थोड़ेसे अर्थ हमने यहाँ प्रसंगवशात् दे दिए हैं। इसप्रकार यदि हम 'नमः' शब्दके अर्थोंका संक्षेपमें संग्रह करें, तो वह संग्रह इस प्रकार होगा—

नमः—सत्कार, श्रद्धा, किसीके सामने झुकना, नीचा होना, त्याग, अन्न (सम्पूर्ण भोग्य सामग्री), वज्र (सम्पूर्ण घातक शस्त्रास्त्र); यज्ञ और भेंट।

पू०—यह कैसे प्रतीत हो कि इन बहुतसे अर्थोंमें से 'नमः' शब्दका कहाँ क्या अर्थ है?

सि०—थोड़ीसी भी बुद्धिका प्रयोग किया जाय तो यह उलझन भी आसानी-से सुलझ सकती है। प्रकरण, समय तथा स्थानादिको देखकर यह बात बड़ी आसानीसे पहिचानी जा सकती है कि 'नमः' शब्दका कहाँ क्या अर्थ होना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए। संस्कृत साहित्यमें 'सैन्धव' शब्दके 'नमक' और 'घोड़ा' दोनों ही अर्थ हैं। एक आदमी रसोई घरमें भोजन करते समय अपने नौकरसे कहता है—

"सूपाय किंचित् सैन्धवमानीयताम्, नूनमद्य न्यूनमाभाति"

अर्थात् दालके लिए थोड़ा 'सैन्धव' ले आवो, कुछ आज कम मालूम होता है। यह सुनते ही नौकर सैन्धव अर्थात् सेन्धा नमक ले आवेगा, घोड़ा नहीं। और जब मालिकको हवाखोरी करने जाना होगा, उस समय नौकर सैन्धव—घोड़ा ही लाएगा, नमक नहीं। ठीक इसी तरह 'नमः' शब्दके प्रयोगको देखकर पहिचानो कि यहाँ 'नमः' शब्दका प्रयोग किस दृष्टिसे है। पाठक अब इस बातको समझ गये होंगे कि इनसब अर्थोंको कण्ठाग्र कर लेने पर यह कहनेवालोंकी जवान बन्द हो जाएगी कि छोटा तो बड़ोंको 'नमस्ते' करे पर बड़ा छोटोंको नमस्ते कैसे करे ?

जिस समय छोटा, पुत्र या शिष्य अपने पिता या आचार्यको 'नमस्ते' करता है उस समय उसका यही अर्थ होता है कि 'आपके लिए सत्कार हो, मैं आपके सामने झुकता हूँ, मेरे हृदयमें आपके प्रति श्रद्धा है' इत्यादि। और उसके उत्तर-में पिता या आचार्य अपने बेटे या शिष्यको आशीर्वाद देते हैं कि 'नमस्ते' अर्थात् 'तेरे लिए अन्नादि समस्त भोग्य सामग्री प्राप्त हो, तू फूले-फले, समृद्धिशाली हो' इत्यादि। यही तो बड़ोंका आशीर्वाद होता है। अब चाहे परस्पर 'नमस्ते' करते हुए क्यों न हृदय में परमात्माका नाम याद करते रहो। हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं। इसीका नाम है भूख के समय भोजन माँगना, प्यासके समय पानी माँगना तथा सत्कारके समय सत्कार और आशीर्वादके समय आशीर्वाद देना। परमात्मा का नाम स्मरण करनेसे तुम्हें कोई नहीं रोकता।

बराबरवाले परस्पर 'नमस्ते' करके एक-दूसरेका सत्कार ही करते हैं। परन्तु इसके साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यदि बड़ा भी छोटोंको सत्कार करनेके अभिप्रायसे 'नमस्ते' करता है तो भी कोई दोष नहीं और कोई पाप नहीं। संसारमें तो यह होता ही है कि बड़ा भी छोटेका सत्कार करता है, क्योंकि वह छोटा बड़ेके सत्कारका साधन बन सकता है। यदि तुम स्वयं सत्कार चाहते हो तो औरोंका भी सत्कार करो। छोटोंका सत्कार करना उनको अपने समान बनानेका अच्छा साधन है। जितना तुम उसका सत्कार करोगे उतना ही वह तुम्हारा भी सत्कार करेगा और करायेगा।

यदि 'नमस्ते' शब्दका शास्त्रोक्त प्रयोग देखना हो तो आइए सारे वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य पर सरसरी नजर डालें, बहुत स्थानों पर 'नमस्ते' शब्दका प्रयोग मिलेगा। हम स्थान-स्थान पर नमस्ते शब्दका प्रयोग दिखायेंगे, प्रकरण तथा स्थानको देखकर पाठकवृन्द स्वयं विचार लेंगे कि उपरिलिखित 'नमः' शब्दके अर्थोंमेंसे कौनसा अर्थ उपयुक्त है। 'ते' शब्दका अर्थ सब जगह 'तुम्हारे लिए' ही होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यजुर्वेदका सारा १६वाँ अध्याय उठाकर पढ़ जाइए, उसमें 'नमस्ते' शब्दका बहुत प्रयोग है—

(१) नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च दुधन्याय च ॥

(यजु० १६।३२)

इस मंत्र में छोटे, बड़े, पूर्वज एवं नीच तथा मध्यम आदि सबके लिए 'नमस्ते' का प्रयोग है !

(२) नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो दिषादेभ्यः पुञ्जिजष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥ (यजु० १६।२७)

यहाँ तो तक्ष—तरखान, राजमिस्त्री, रथकार, कुलाल—कुम्हार, निषाद अर्थात् चाण्डाल तथा कुत्तों के शिक्षक, आदि सबके लिए 'नमस्ते' का प्रयोग है अर्थात् इनके लिए अन्नादि भोग्य सामग्री देनेका विधान है।

(३) नमो वंचते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघाँसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तंचरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः। (यजु० १६।२१)

इस मन्त्रमें छली, कपटी चोरोंके सरदार, हिंसक, लुटेरे तथा गठकतरे आदि सभीके लिए 'नमस्ते' शब्दका प्रयोग होता है अर्थात् उन्हें नमः वज्रसे मारनेका विधान है।

यजुर्वेद के १६वें अध्यायके हमने तीन ही मन्त्र केवल दिखानेमात्रके लिए लिखे हैं यह तो सारा अध्याय नमस्ते शब्दसे भरा पड़ा है।

हमारे पौराणिक भाई कहते हैं कि यह तो रुद्राध्याय है इसमें परमात्माके प्रति 'नमस्ते' है।

यथा—'नमस्ते रुद्र मन्यवे—' इत्यादि। (यजु० १६।१)

मैं अपने उन पौराणिक भाइयोंसे पूछता हूँ कि यदि वस्तुतः इस अध्यायमें सर्वत्र रुद्र अर्थात् परमात्माको ही 'नमस्ते' है, तव तो इस अध्याय में आये चोर, लुटेरे, डाकू, कुत्ते, शूद्र तथा चाण्डालादि सभी प्राणी परमात्माके ही रूप हो गये जिनको भिन्न-भिन्न अभिप्रायसे 'नमस्ते' किया गया है। तब तो भाई ? जब तुम्हारे घरमें चोर, लुटेरे, कसाई या चाण्डाल घुस आवें तब तुम उनकी अर्घ आदि देकर पूजा किया करो। वे लुटेरे आपकी भक्तिसे बड़े प्रसन्न होंगे, और आपको अपने घरमें रुपया पैसा तथा अन्य सामान आदि रखनेकी तकलीफ भी नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होगी, क्योंकि वे सब उठाकर ले जायेंगे। शूद्र और चाण्डालोंको भी मन्दिरोंमें आनेसे क्यों रोकते हो ? भाई ! वे भी तुम्हारे कथनानुसार रुद्र परमात्माके ही तो रूप हैं।

(४) ……नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे……

(यजु० १७।११)

(५) 'नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्य: मृत्यो मूलभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं नम:'। (अथर्व० ६।१३।३)

(६) 'नमस्ते राजन्' अथर्व० २।१०।२

(७) 'नमस्ते अग्न ओजसे' सामवेद प्र० १, अर्ध पृ० १, द० २, मं० १ ॥

इनसब स्थानोंमें 'नमस्ते' शब्दका प्रयोग है।

(८) नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्य: नमो युवाभ्यो नमो आसिनेभ्य:

(ऋग्० १।२७।१३)

यहाँपर क्रमश: बड़े, छोटे, जवान तथा बूढ़े सबके लिए 'नमस्ते' किया गया है 'अर्भक' शब्दका अर्थ है छोटा। यास्कमुनि निरुक्त ३।४।२० में लिखते हैं— 'दभ्रमर्भकमित्यल्पस्य' अर्थात् 'दभ्र' और 'अभ्रक' शब्द थोड़े या छोटेके अर्थमें आते हैं।

(९) शतपथ ब्राह्मणमें आता है कि गार्गी अपने पति याज्ञवल्क्यको नमस्ते करती है।

साहोवाच—नमस्ते यात्रवल्क्य।

(१०) याज्ञवल्क्य यद्यपि ऋषि थे, वे पदवीमें अपनेसे छोटे राजा जनकको नमस्ते करते हैं—

"साहोवच-जनको वैदेहो-नमस्ते" (शतपथ)

(११) महर्षि 'यम' जोकि नचिकेताके आचार्य होनेके कारण अपने शिष्यसे बड़े थे, अपने शिष्य नचिकेताको नमस्ते कहते हैं—

नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु

(कठोपनिषद व० १ कं० ९)

(१२) गीता में अर्जुनने कृष्णको नमस्ते किया—

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्व:,
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते,
नम: पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते,
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ॥

गीता ११।३९।४०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१३) पौराणिक कालके भवभूति नामके महाकविलिखित ग्रन्थ उत्तररामचरितमें रामने सीताको नमस्ते किया है—

भगवति ! नमस्ते (उत्तररामचरित)

(१४) आइए, अब हम पुराणोंको टटोलें कि उनमें भी कहाँ-कहाँ नमस्ते शब्दका प्रयोग है।

देव देव जगन्नाथ, नमस्ते भुवनेश्वर ।
जीवच्छ्राद्धं महादेव, प्रसादेन विनिर्मितम् ।।

(लिंग पु० ३।२७।७)

हे सम्पूर्ण संसारके स्वामी महादेव ! कृपापूर्वक तुमने जीवित श्रद्धाका निर्माण किया है। इसलिए तुम्हें नमस्ते हो।

(१५) पृथ्वी वराहरूपधारी भगवान् की स्तुति करती हुई बोली—

शेषपर्यंकशयने, धृतवक्षःस्थलश्रिये ।
नमस्ते सर्वदेवेश, नमस्ते मोक्षकारिणे ।।

(वाराह पु० १।२१)

शेषनागरूपी शय्यापर छातीपर लक्ष्मीको धारण करनेवाले भगवान्को नमस्ते हो, मोक्षदायक भगवान्को नमस्ते हो।

(१६) वराह पृथ्वीसे बोला—

क—नमोऽस्तु विष्णवे नित्यं, नमस्ते पीतवाससे ।
नमस्ते चाघरुपाय, नमस्ते जलरुपिणे ।।

(वाराह पु० ११।११)

पीतवस्त्रधारी विष्णुको नित्य नमस्ते हो, पापरूप विष्णुको नमस्ते हो, जलरूप विष्णुको नित्य नमस्ते हो ।।

ख—नमस्ते सर्वसंस्थाय, नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते क्षितिरूपाय, नमस्ते तैजसात्मने ।।

(वाराह पु० ११।१२)

सर्वव्यापक, जलमें सोनेवाले, पृथ्वीरूप तथा तेजःस्वरूप विष्णुको नित्य नमस्ते हो।

(१७) केतकीका फूल जड़ होता हुआ भी महादेवको नमस्ते करता है—

नमस्ते नाथ मे जन्म, निष्फलं भवदायज्ञया ।

(शिव० पु० विद्येश्वर सं० अ० १०, श्लोक १७)

हे नाथ ! मेरा जन्म आपकी आज्ञासे निष्फल हो गया। मैं आपको नमस्ते करता हूँ। यहाँ नमस्ते शब्दमें कहीं कुछ व्यङ्ग तो नहीं !

(१८) ब्रह्मा तथा विष्णु महादेवको नमस्ते करते हैं—

नमः सकलनाथाय, नमस्ते सकलात्मने ।।२८।।

(शिव पु० विद्येश्वर सं० १, अध्याय १०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबके नाथ तथा सबके आत्मा शिव के लिए नमस्ते हो ॥

(१९) पौराणिकोंके यहाँ स्त्री तथा शूद्र अच्छी दृष्टिसे नहीं देखे जाते। 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' इत्यादि मनगढ़न्त वाक्योंके प्रमाणसे वे स्त्री तथा शूद्रको पढ़नेका अधिकार तक नहीं देते। अतः प्रतीत ऐसा होता है कि हमारे पौराणिक भाई, स्त्री तथा शूद्रको नीच समझते हैं। परन्तु पुराणोंमें तो उन स्त्री और शूद्रोंके लिए भी नमः शब्दका प्रयोग है—

द्विजानाञ्च नमः पूर्वमन्येषाञ्च नमोऽन्तकम् ।
स्त्रीणांच क्वचिदिच्छन्ति, नमोऽन्तं च यथाविधि ॥

(शिव पु० विद्येश्वर सं० १, अ० श्लो० ४२)

द्विजोंके लिए पूर्व नमः शब्दका प्रयोग करना चाहिए तथा अन्योंके लिए अन्तमें नमः शब्द प्रयुक्त होना चाहिए और स्त्रियोंके लिए भी यथाविधि कहीं नमः शब्दका अन्तमें प्रयोग करते हैं (कहीं पूर्व भी)।

परिणामतः पौराणिकोंका यह कहना कि नीचोंके लिए नमस्ते नहीं होता, ठीक नहीं।

(२०) दक्ष अपनी पुत्री सतीको नमस्ते करता है—

वीरिणीसम्भवां दृष्ट्वा, दक्षस्तां जगदम्बिकाम् ।
नमस्कृत्य करौ बद्ध्वा, वहु तुष्टाव भक्तितः ॥२७॥

(शिव पु० रुद्र० सं० २ सती खं० अध्याय १४)

दक्षने अपनी स्त्री वीरिणीसे उत्पन्न जगत्की माता उस सतीको देखकर दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करके भक्तिसे उसकी स्तुति की।

पौराणिक भाई अब इसका उत्तर दें कि यदि पिता अपनी पुत्रीको नमस्कार या नमस्ते करके सत्कार करे तो उसका क्या मतलब होता है? क्या यह अपनेसे छोटेको नमस्ते करनेका प्रमाण नहीं है?

(२१) मनुस्मृतिमें एक वाक्य आता है कि—

क्षत्रियाद् विप्रकन्यायां, सूतो भवति जातितः ।

(मनु० १०।११)

अर्थात् एक ब्राह्मणकी लड़कीमें क्षत्रियके द्वारा जो सन्तान पैदा हो उसे सूत कहते हैं। इस वाक्यके प्रमाणसे हमारे पौराणिकधर्मी भाइयोंके सिद्धान्तमें सूत एक वर्णसंकर शूद्र होता है। परन्तु पुराणके अध्ययनसे यह पता चलता है कि सूत नामवाले वर्णसंकर शूद्रको भी ऋषियों ने नमस्ते किया। ऋषि बोले—

सूत सूत महाभाग, व्यासशिष्य; नमोऽस्तुते ।
तदेव व्यासतो ब्रूहि, भस्ममहात्म्यमुत्तमम् ॥१॥

(शिव पु० विद्येश्वर सं० १ अध्याय २३)

हे सौभाग्ययुक्त! व्यासके शिष्य सूत! हम आपको नमस्ते करते हैं। आप व्याससे पढ़ा हुआ भस्मका महात्म्य हमें सुनाइये ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या यहाँ बड़ेने छोटेको नमस्ते नहीं किया ? एक और भी बात यहाँ प्रसङ्ग-वशात् लिख देनी आवश्यक है और वह यह कि पुराणोंके अनुसार इन सूतजीने जोकि शूद्रसे भी पतित है, पुराणोंको गा-गाकर सुनाया है। मालूम होता है कि पुराण अवश्यमेव शूद्रके ही लिए हैं। इसीलिए भागवतमें आया है कि—

स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां, त्रयी न श्रुतिगोचरा।
कर्मश्रेयसि मूढ़ानां, श्रेय एवं भवेदिह ॥२५॥
इति भारतमाख्यानं, कृपया मुनिना कृतम् ॥२६॥

(भागवत स्कं० १ अध्याय ४)

अर्थात् स्त्री, शूद्र तथा जो पतित द्विज हैं वे वेदाध्ययन नहीं कर सकते इस-लिए उनके लिए मुनिने महाभारत की रचना की जिससे कि वे भी अपना कर्तव्या-कर्तव्य निश्चय कर सकें।

(२२) विष्णुका दधीचिको नमस्ते—

बिभेमीति सकृद् वक्तु मर्हसि त्वं नमस्तव ॥१२॥
जगाम निकटं तस्य, प्रणनाम मुनिं हरिः ॥४३॥

(शिव पु० रुद्र० सं० २ सती खं० २ अ० ३६)

विष्णुने दधीचिसे कहा, मैं एकबार कहनेमें डरता हूँ। तुम पूजाके योग्य हो। मैं तुम्हें नमस्ते करता हूँ। तब विष्णुजी उस दधीचके समीप गये और उसको भी प्रणाम किया।

(२३) ब्रह्माने अपने पुत्रको नमस्ते किया—

ब्रह्मोवाच—

नमस्ते भगवन् रुद्र, भास्करामिततेजसे ॥४८॥
भगवन् भूतभव्येश, मम पुत्र महेश्वर।
सृष्टिहेतोस्त्वमुत्पन्नो, ममांगेऽनंगनाशनः ॥४५॥

(शि० पु० वायु सं० ७ खं० १ अ० १२)

ब्रह्मा बोले, सूर्यके समान महतेजस्वी भगवान् रुद्रके लिए नमस्ते हो ॥४१॥ हे भगवन् ! हे भूत, भविष्य तथा वर्तमानके अधिपति मेरे पुत्र महेश्वर ! हे काम नाशक ! तुम मेरे शरीरसे सृष्टिके निमित्त उत्पन्न हुए हो ॥४५॥

ऐसे स्थलपर हमारे पौराणिक भाई कहा करते हैं कि यहाँ वस्तुतः पिता अपने पुत्रको नमस्ते नहीं करता। यहाँ परमेश्वर स्वयं ही पुत्र रूपमें प्रकट हुए हैं, अतः नमस्ते परमेश्वर को ही है।

मेरा निवेदन यह है कि पौराणिकसम्मत वेदान्तके अनुसार तो सारा संसार ही ब्रह्मरूप है। लौकिक माता, पिता तथा पुत्रादि सभी सम्बन्धी भी ब्रह्मरूप ही हैं। अतः यदि वे परस्पर नमस्ते करें तो क्या दोष ? तबभी तो आपके कथनानुसार ब्रह्म ही ब्रह्मको नमस्ते करेगा।

(२४) शिवने अपनी स्त्री पार्वतीको नमस्ते किया—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तथा प्रणयभङ्गेन, भीतो भूतपति स्वयम् ।
पदयोः प्रणमन्नेव, भवानीं प्रत्यभाषत ॥४०॥

(शिव पु० वायु० सं० ७ खं० १ अध्याय १२)

तथा स्वयं शिव ने प्रीतिभंगसे भयभीत होकर पार्वतीके चरणोंमें नमस्ते करके उत्तर दिया।

(२५) ब्रह्माने अपनी धर्मपत्नी सावित्रीके चरणोंमें गिरकर नमस्ते किया—

न चापराधं भूयोऽन्यं, करिष्ये तव सुव्रते !
पादयोः पतितस्तेऽहं, क्षम देवि नमोऽस्तुते ॥१५०॥

(पद्म० पु० सृ० खं० अ० १७)

ब्रह्मा बोले—हे सुव्रते देवि ! मैं तुम्हारे पैरोंपर गिरा हूँ। क्षमा करो। मैं फिर तुम्हारा अपराध नहीं करूँगा। तुम्हें नमस्ते हो।

इन ऊपरके दो श्लोकोंमें तो पति अपनी स्त्रियोंके पैरोंपर गिरकर नमस्ते कर रहे हैं। यह अपनी स्त्रीके चरणोंमें गिरकर नमस्ते करना तो वेदविरुद्ध पौराणिक लीला है। परन्तु पति पत्नीका परस्पर प्रेम से सत्कारार्थ नमस्ते करना आर्यसमाजका वैदिक सिद्धान्त है।

इस नमस्तेके लिए प्रमाण बहुत अधिक हैं। अतः लेखकी काया बढ़नेके भयसे मैं केवल प्रमाण देता चला जाऊँगा। जहाँ आवश्यक होगा वहाँ अर्थ भी कर दिया जाएगा:—

(२६) वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासानां वासुदेव नमोऽस्तुते ॥३४॥

(विष्णु सहस्रनाम)

वासुदेव को नमस्ते किया गया है।

(२७) नमस्ते भगवन् रुद्र (देवायर) पानां पतये नमः ।
सर्वोपासित रूपाय सुरासुर पतये नमः ॥

(पार्थिव पूजन)

यहाँ सुरासुर पति रुद्रको नमस्ते किया गया है।

(२८) गोविन्द नमो नमस्ते (पाण्डव गीता)

हे गोविन्द ! तुम्हें नमस्ते हो।

(२९) क—या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

ख—नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे,
नमस्ते जगद्व्यापिके चित्स्वरूपे ।
नमस्ते सदानन्दरूपे नमस्ते,
जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे नमस्ते ॥

(देवी भागवत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन उपरिलिखित श्लोकोंमें जगद्रक्षिका दुर्गाको नमस्ते किया गया है।

(३०) नमस्ते भगवन् भूयो, देहिमें मोक्ष शाश्वतम् । (सारस्वत सूत्र २५८)

हे भगवन् ! तुम्हें बार-बार नमस्ते हो। तुम मुझे मुक्ति दो।

(३१) 'नमस्तेवाङ् मनोतीतरूपाय' (सत्यनारायण)

वाणी तथा मन के अगोचर प्रभु को नमस्ते हो।

(३२) इसी प्रकार दुर्गापाठके पञ्चम अध्यायके श्लोक १६ से लेकर श्लोक ७६ तक अनेक स्थलोंपर नमस्ते शब्द आया है।

(३३) जगदादिरनादिस्त्वं, नमस्ते स्वात्मवेदिने।

(शिव पु० उत्तर खं० अध्याय १४ श्लो० २८)

हे प्रभो ! तुम जगत्के आदि कारण और स्वयं अनादि हो, तुम्हें नमस्ते हो।

(३४) श्रीमद्भागवतमें श्रीकृष्णने उत्तम ब्राह्मणोंको नमस्ते किया है—

विप्रान् स्वालाभसन्तुष्टान्,
साधून् भूतसुहृत्तमान् ।
निरहंकारिणीः शान्तान्;
नमस्ते शिरसाऽसकृद ॥

ऐसे विप्रोंको बार-बार नमस्ते हो, जब सब मित्र अहंकारशून्य शान्ति तथा लाभ न होनेपर भी सन्तोष करनेवाले हैं।

(३५) बृहदारण्यकोपनिषद् में आया है कि राजा जनकने अपने आसनसे उठकर मुनि याज्ञवल्क्यको नमस्ते किया—

जनको हं वैदेहः कूर्चादुपापसर्पन्नुवाच नमस्ते।

(३६) बालमीकिरामायण बालकांड सर्ग ५० श्लोक १७ में विश्वामित्रने 'नमस्तेस्तु' आपको मेरा नमस्ते हो, ऐसा कहकर वसिष्ठ से विदा ली थी।

(३७) सीता जङ्गलमें विराध नामके राक्षसको नमस्ते करती है—

मामृक्षा भक्षयिष्यन्ति, शार्दूलद्वीपिनस्तथा ।
मा हरोत्सृज काकुत्स्थ, नमस्ते राक्षसोत्तम् ॥

(बालमीकि रामायण सर्ग ४ श्लोक ३)

(३८) अथर्ववेदमें स्त्री जातिके लिए नमस्तेका प्रयोग है—

नमस्ते जायमानायै, जाताया उत ते नमः। (अथर्ववेद १०।१०।१)

नमस्ते शब्द का व्यवहार अथर्ववेद तथा अन्य वेदोंके अन्दर बहुत अधिक है। विज्ञ पाठक स्वयं भी देख सकते हैं।

इस प्रकार हमने नमस्ते शब्दका व्यवहार संक्षेप रूपसे वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, गीता, रामायण तथा पुराणादि सभी ग्रन्थोंमें दिखा दिया है। मैं समझता हूँ कि इतने विवेचनसे हमारे पण्डितम्मन्य पौराणिक भाइयोंकी आँखें अवश्य खुल गयी होंगी।

पू०—नमस्ते इस शब्दमें दो विभाग हैं—नमः—ते। वास्तव में यहाँ था—नमः—तुभ्यम्। परन्तु यह याद रखना चाहिए कि तुभ्यम् के स्थानपर ते आदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पद्य (श्लोकादि) में ही होता है, गद्य अर्थात् सीधी बोलचालकी भाषामें नहीं होता। अतः व्याकरण की दृष्टिसे आर्यसमाजियोंका बोलचालकी भाषामें नमस्ते शब्दका प्रयोग अशुद्ध है। तभी तो भट्टोजीदीक्षितने सिद्धान्तकौमुद्रीमें तुभ्यम् के स्थानपर ते आदेश होनेका जो प्रमाण दिया है, वह श्लोकमें दिखाकर दिया है। यथा—

श्रीस्त्वावतु मापीह, दत्तात्ते मेपि शर्म सः।
स्वामी ते मे पि स हरिः पातु वामपि नौ हरिः॥१॥

सि०—पौराणिक भाईकी यह शंका व्यर्थ है। यदि वह सिद्धान्तकौमुदीका ठीक तरह से मनन करे तो उसे ऐसी बात कहनेकी हिम्मत ही न पड़े। आगे चलकर कौमुदीकारने एक वार्तिक लिखा है—

'सामनवाक्ये निघात युष्मदस्मदादेशा वक्तव्या'—

इस वार्तिकके अनुसार एक ही वाक्यमें, (भिन्न वाक्यमें नहीं) हम तुभ्यम् के स्थानपर ते आदेश कर सकते हैं। इसमें यह आग्रहहठ नहीं है कि वह किसी पद्यमें ही आया हो। इसीलिए भट्टोजीदीक्षितने आगे जो ते आदेश होनेका दृष्टान्त दिया है वह पद्यका नहीं है अपितु गद्य अर्थात् सीधी बोलचालकी भाषाका है। यथा—

'शालीनां ते आदन दास्यामि'

यहाँ यह गद्य-वाक्य है। अगले—

"एतेवां नावादया आदेशा अनन्वादेशे वा वक्तव्या"

इस वार्तिकको पढ़नेसे यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है, कि जब हम देखते हैं कि इस वार्तिकका प्रत्युदाहरण भट्टोजीदीक्षितने गद्यमें ही दिया है—

'तस्मै ते नमः'।

परिणामतः हम यह दावेसे कह सकते हैं कि नमस्ते शब्द ठीक है, प्रमाणिक है तथा इसीका बोलचालकी भाषामें प्रयोग होना चाहिए।

पू०—नमस्ते शब्दको दो टुकड़ोंमें बाँटा जाता है, नमः, ते। ते शब्द तुभ्यम् के स्थानपर आदेश होता है। परन्तु विचारणीय बात यहाँपर यह है कि तुभ्यम् शब्द युष्मद् शब्दकी चतुर्थी विभक्तिके एक वचनका रूप है। इसका अर्थ है तेरे लिए। ऐसी अवस्थामें यह कैसा असभ्य व्यवहार होगा कि पुत्र अपने पिताको यह कहे कि तेरे लिए नमः हो? आदरके लिए उसको कहना तो यह चाहिए था कि आपके लिए नमः हो। अतः समझमें यही आता है कि आर्यसमाजमें नमस्ते शब्दका व्यवहार अनुपयुक्त है।

सि०—यह कोई आवश्यक नहीं कि ते एक वचनका रूप प्रयोग करने से बड़ों-का अनादर होता है। यह तो केवल प्रत्येक भाषाका अपना-अपना तरीका होता है। अंग्रेजीमें ही इस एक वचनके रूपका अर्थ है वह। परन्तु इसका प्रयोग छोटे-बड़े सबके लिए समान रूपसे होता है। यदि कोई छोटा पुरुष बड़ेके लिए ही इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकवचनान्त शब्दका व्यवहार करता है, तो इसमें बड़ा व्यक्ति अपना अपमान नहीं समझता, क्योंकि यह उसकी भाषाके व्यवहारका तरीका है। परन्तु हाँ, यदि हम नमस्ते शब्दमें ते शब्दका हिन्दी अनुवाद करके किसी महापुरुषसे कहें कि तेरे लिए नमः तो यह एक अपमानसूचक प्रयोग होगा, क्योंकि इस हिन्दीके व्यवहार का यही भाव समझा जाता है। थोड़ी देरके लिए यदि हम मान भी लें कि ते शब्द अपमानसूचक है, तो पौराणिक भाइयोंसे पूछा जा सकता है कि पूर्व दिये हुए पुराणोंके उदाहरणमें परमात्माके लिए, अपने-अपने पिताके लिए, गुरुओंके लिए, ऋषियोंके लिए तथा अपने अन्य पूज्योंके लिए, एक वचनके ते शब्दका प्रयोग क्यों किया गया है? क्या वहाँ अपमानसूचित नहीं होता? द्विवचनका प्रयोग तो एकके लिए हो ही नहीं सकता। शेष रह गया बहुवचनका प्रयोग। अब यदि ते के स्थानपर बहुवचनका वह शब्द प्रयुक्त कर देते तो हमारे पौराणिक भाई यह प्रश्न कर बैठा, कि छोटोंको नमः करते समय बहुवचनान्त शब्दके प्रयोगकी क्या आवश्यकता? बहुत हदतक यह उनका प्रश्न ठीक भी होता। इन आपत्तियोंसे बचनेके लिए वैदिक साहित्यज्ञोंने ते एकवचनान्त शब्दका सबके लिए प्रयोग करना उचित समझा और यह युक्तियुक्त भी है।

हमारे पौराणिक धर्मियोंके तो पुराण उनके विश्वासके अनुसार वेद हैं। जैसाकि भागवतमें आया है—

क—ऋग्युजुःसामार्थवाख्या, वेदश्चत्वार उद्धृताः।
इतिहासपुराणं च, पञ्चमो वेद उच्यते ॥२०॥

(भागवत स्कं० १ अ० ४)

ख—इतिहासपुराणानि पञ्चमं वेदमीश्वरः।
सर्वेभ्य एव वक्त्रेभ्यः ससृजे सर्वदर्शनः ॥३९॥

(भागवत स्कं० ३ अ० १२)

इन दोनों श्लोकोंके अनुसार पुराणोंको पाँचवाँ वेद माना गया है। इन पौराणिकोंके वेदमेंसे भी हमने अच्छी तरह दिखा दिया है कि छोटे-बड़े सबके लिए 'नमस्ते' उपयुक्त है। सच्चे वेदों (ऋग्, यजु, साम और अथर्व) में से भी 'नमस्ते' की प्रमाणिकता को सिद्ध कर दिया गया है। अतः, हे आर्य भाइयो! आओ, हम एक-दूसरेमें अनेकता तथा विद्वेष फैलानेवाले 'सीताराम' तथा 'राधे-श्याम, आदि असम्बद्ध शब्दोंका परित्याग करके परस्परके सत्कार एवं आशीर्वादके लिए वैदिक 'नमस्ते' को ही अपनावें और परस्पर नमस्ते करके एकताके सूत्र में बँध जावें। आप भी परस्पर नमस्ते कीजिये और मैं भी आपसे सादर नमस्ते करके विदा होता हूँ।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रीकृष्ण चरित

डा० भवानीलाल भारतीय, एम० ए०, पी-एच० डी०

धर्म-संस्कारक, स्वराज्य-स्रष्टा, निःस्पृह, परिव्राट्, विचक्षण राजनीतिज्ञ आदि गुणों से सम्पन्न महामानव योगिराज श्रीकृष्ण का आगमन इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना है।

श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति के उन्नायक तथा स्रष्टा रहे हैं। उनको ठीक से समझना और अपनी परम्परा का ज्ञान प्राप्त करना आज के संक्रान्ति युग में अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

श्रीकृष्ण के जीवन पर आलोचनात्मक पद्धति से महाभारत पर आधारित अनुसन्धानपूर्वक प्रकाश डालने वाली ऐसी अन्य पुस्तक अभी तक आपने नहीं देखी होगी।

हर राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक, विचारक, शिक्षक तथा मननशील पाठक के लिए आवश्यक पुस्तक।

डिमाई आकार के २४० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २५.०० मात्र

श्रीमद्भगवद्गीता	श्री सत्यपाल विद्यालंकार	८.००
षड्दर्शनम्	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	५०.००
वाल्मीकि रामायण	,, ,,	८०.००
प्रार्थना लोक	,, ,,	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	,, ,,	३.००
यजुर्वेद सूक्ति सुधा	,, ,,	३.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	,, ,,	५.००
वैदिक वन्दन	पं० सत्यकाम विद्यालंकार	७.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	५०.००
वैदिक संस्कृति का सन्देश	,,	३५.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	,,	१५.००
सत्यार्थ सरस्वती	पं० मदनमोहन विद्यासागर	२५.००
संस्कार समुच्चय	,,	४५.००
वेदों के अनुपम विचार	प्रो० विष्णुदयाल (मौरिशस)	६.५०
ईश्वर प्रत्यक्ष	पं० मदनमोहन विद्यासागर	९.००
वेदोद्यान के चुने हुए फूल	आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति	१५.००

पं० भगवद्दत्त रिसर्चस्कॉलर द्वारा सम्पादित

सत्यार्थप्रकाश (आठ परिशिष्ट, मोटे अक्षर) सजिल्द	२५.००
सत्यार्थप्रकाश (आर्ट पेपर पर छपा, सुनहरी जिल्द, राज संस्करण)	१०१.००

प्रकाशक-मुद्रक विजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi